प्रस्तावना

मेरा शोध विषय **"इस्मत चुगताई की कहानियों में स्त्री का बदलता रूप व संघर्ष"** है। स्त्री का रूप हर कालखंड में बदलता रहा है, प्राचीन समय से लेकर अब तक स्त्रियों को अनेक संघर्षों से गुजरना पड़ा हैं। पूर्ववैदिक कालीन समाज व उससे पूर्व के समाज में स्त्रियों को काफी स्वतन्त्रता प्राप्त थी लेकिन उत्तरोत्तर बाद के कालखंडो में स्त्रियों को वस्तु समझकर अपने अधीन रखने की पुरुषवादी सोच ने ही उनके समस्त अधिकारों का हनन कर दिया। समाज के बीच एक स्त्री स्वयं को सुरक्षित नहीं महसूस कर पाती क्योंकि सदियों से हिंसाओं, अत्याचारों का सामना करते हुए आज वर्तमान में भी अनेक समस्याओं से पीड़ित हैं। स्त्री अधिकारों की बात पाश्चात्य की क्रांतियों से शुरू होती हैं सन् 1789 ई॰ में फ्रांस की क्रांति से स्त्रियों को भी अधिकार मिला लेकिन इसके बाद भी अनेक तरह के अधिकार नहीं मिल पाए जिसके लिए स्त्रियों ने लगातार संघर्ष किया। माता सावित्रीबाई फूले ने स्त्रियों के लिए शिक्षा की ज्योति जलाई वे भारत की प्रथम शिक्षिका के रूप में स्थापित हैं इसके साथ ही राजाराममोहन राय, दयानंद सरस्वती, महात्मा गांधी, डॉ. भीमराव अंबेडकर, पंडिता रमाबाई, सरोजनी नायडू आदि अपने अथक प्रयास से स्त्रियों को अधिकार दिलाने के लिए कोशिश करते हैं। नारीवादियों ने स्त्री मुक्ति आंदोलन के साथ –साथ ऐसे अनेक आंदोलनों के माध्यम से स्त्री के अधिकारों के लिए आवाज़ उठाती हैं। नारिवाद एक आंदोलन के साथ- साथ विचारधारा भी हैं जिसका संबंध स्त्रियों के जीवन में घटने वाली सभी समस्याओं से जुड़ी हैं बलात्कार, घरेलू-उत्पीड़न, इसके अंतर्गत आते हैं उसके लिए समय- समय पर आंदोलन करती हैं। समान वेतन, पारिवारिक सम्मान व निर्णय लेने का अधिकार, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सभी मुद्दे स्त्रियों की समस्याओं को आधार बनाकर स्त्री लेखिकाओं ने लिखना शुरू किया उस समय इस्मत चुगताई उर्दू की प्रथम लेखिका हैं जिन्होनें स्त्री के शोषण के प्रति विरोध ही नहीं उनसे मुक्ति के रास्तो को भी तलाशा। पितृसत्तात्मक समाज का ऐसा कोई भी कोना नहीं हैं जहां स्त्रियाँ शोषित न होती हो। इस

शोध के लिए मेरी साहित्य पुनरावलोकन, शोध प्रश्न, शोध उद्देश्य, शोध प्रविधि व शोध सीमा निम्न हैं-

साहित्य पुनरावलोकन

1) मंटो की सदी- रवीन्द्र कालिया।

मंटो इस्मत चुगताई के समय काल से हैं इसीलिए उनके विषय में भी जानना बहुत जरूरी हो जाता हैं इस पुस्तक में मंटो के विषय में बताया गया हैं कि मंटो उर्दू के कथाकार थे मगर हिन्दी में भी उनकी पहचान बनी हुई हैं। उनके काठ शिल्प कि तुलना विश्व के श्रेष्टतम कथाकारों में मानी जाती हैं अपने दौर मंटो में मंटो पर कृष्ण चंदर, उपेन्द्रनाथ अश्क, इस्मत चुगताई ने आत्मीय संस्मरण लिखते हैं। कृष्ण चंदर ने कहा हैं :-

"मंटो एक गरीब सताई हुई जुबान और सताया हुआ साहित्यकार था"

आगे लिखते हैं कि:-

"मंटो जवाहरलाल और इक़बाल कि तरह कश्मीरी पंडित थे"

हिंदी में आज भी मंटो बहुत ही शौक से पढ़े जाते हैं हिंदी में उनकी रचनावली भी उपलब्ध है, मंटो के लिए यह दुर्भाग्यवश रहा कि अज्ञानवश उनकी कहानियों को अश्लीलता का दर्जा दिया गया हैं। जिसके कारण मंटो को कई मुकदमों का सामना करना पड़ता है। इस पुस्तक में उनके कुछ संस्मरण, उनकी कुछ कहानियों का प्रकाशन किया हैं।

2) बीसवीं शताब्दी में उर्दू साहित्य, संपादक -गोपीचन्द नारंग, प्रकाशक।

अध्याय:- बीसवीं शताब्दी में उर्दू उपन्यास

अध्याय;- बीसवीं शताब्दी में उर्दू कहानी

इस पुस्तक के दोनों अध्यायों में इस्मत चुगताई के विषय में बताया गया हैं। इस्मत जब लिखना शुरू करती हैं तब स्त्री आंदोलनों व स्त्री साहित्य कुछ भी नहीं था। उस समय में राजिन्दर सिंह बेदी लेखन करते हैं लेकिन उनकी कहानियों में समस्याओं से घिरी दुल्हन, हवश की शिकार, उसका

विकास जैसे माँ बनने के लिए हुआ हो जैसी स्त्री का चित्र खींचा गया था। उस वक़्त इस्मत ही थी जिन्होंने स्त्री के असली रूप को दिखती हैं। वह स्त्री की भाषा, लड़कियों, बच्चियों के प्रति समाज की जो मानसिकता है उसका प्रयोग कर अधिक मौलिकता दिखाई देता हैं।

3) उर्दू साहित्य कु परंपरा- जानकी प्रसाद शर्मा।

अध्याय:- इस्मत चुगताई की आपबीती

इस अध्याय में इस्मत की कहानी बचपन के विषय में बताया गया हैं जो इस सामंती परिवेश, बचपन से स्त्री के द्वारा पितृसत्तात्मक समाज के प्रति एक क्रोध को व्यक्त किया गया हैं। रूढ़िगत परंपरा, उसकी मर्यादा के बीच डैम तोड़ती स्त्री की आवाज़, इस्मत के दस दशक के बाद पश्चिम देशों से नारिवाद आंदोलन की शुरुआत होती है तथा उनकी आत्मकथा के विषय में भी बताया गया है।

4) **इस्मत आपा,संपादक- सुकृता पॉल कुमार, अमितेश कुमार।**

इस पुस्तक में इस्मत की कुछ कहानियाँ, इस्मत अपने जीवन में सिनेमा से कितनी जुड़ी थी उस विषय में, उन पर लिखे कुछ लेखकों द्वारा संस्मरण जैसे- मिर्ज़ा अदीब, मंटो, कृष्ण चंदर, पितरस बुख़ारी, वारिस अलवी, वजीर आगा, खालिद लतीफ़, मोहम्मद हसन अस्करी आदि लेखकों द्वारा लिखा गया लेख प्रकाशित हुआ हैं तथा उसके साथ ही साथ उनके कुछ खतों का भी प्रकाशन हुआ हैं। इन सभी लेखों में इस्मत के बचपन की जीवनप्रणाली के विषय में बताया गया हैं, की कॉलेज के दिनों से उनकी कहानियाँ प्रकाशित होती हैं जिसे लड़कियां अधिक शौक से पढ़ती थी। मंटो ने संस्मरण के द्वारा इस्मत के जीवन का उल्लेख करते हैं मंटो व इस्मत की दोस्ती कॉ देख कर सबको यही लगता था की दोनों शादी भी करेंगे परंतु ऐसा नहीं होता जिसके बारे में हैदराबाद में इस्मत से पूछा जाता है। कृष्ण चंदर का कहना था इस्मत का लेखन इतना चर्चित था की मर्द लोग परेशान होते खुद पर उन्हें शर्मिंदगी महसूस होती हैं। अन्य लेखकों ने कहा हैं उनकी कहानी में आँसू, जिंदगी की गहराई, नफ़रत, मुस्लिम समाज सब कुछ स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

5) **उर्दू पर खुलता दरीचा- गोपीचन्द नारंग**

इस पुस्तक में अध्याय मंटो पुनरावलोकन की भूमिका में मंटो के जीवन से जुड़ी बातों को बताया गया है।

6) विमर्श के आयाम - अब्दुल बिसिमल्लाह।

इस पुस्तक के अध्याय मंटो की औरतें में मंटो की कहानियों में औरतों के विभिन्न रूपों के विषय में बताया गया हैं। मंटो के स्त्री चरित्रों में वेश्याएं, विभाजित-दंगों की शिकार औरतें, कारुणिक मानवता की प्रतिमूर्ति नारियां सभी के विषय में बताया गया हैं।

7) औरत कल, आज और कल- आशरानी व्होरा।

इस पुस्तक में स्त्रियों के लिए समाज सुधारकों द्वारा उनके अधिकारों के लिए जो कार्यक्रम चलाए उसके विषय में बताया गया। प्राचीन समय से आधुनिक समय में स्त्रियों के पूरे संघर्ष के विषय में बताया गया हैं।

8) स्त्री के लिए जगह - राजकिशोर

इस पुस्तक में कई लेख हैं जिसमें स्त्रियों से जुड़े लेख है जैसे- मेरे घर की स्त्रियाँ, पुरुष कब्जे में स्त्री कानून, स्त्रियाँ लुप्त क्यों हो रही हैं, अपनी बेटी के लिए आदि इन सभी लेखों के द्वारा स्त्री जीवन के विषय में बताया हैं।

9) पत्रिका- नया पथ, संपादक- मुरली मनोहर प्रसाद सिंह।

इस पत्रिका में इस्मत चुगताई के विषय में लेखकों द्वारा लेखों को प्रकाशित किया गया हैं जिसमे उनके जीवन तथा रचनाओं के विषय में विस्तार से बताया गया हैं।

10) पत्रिका- समकालीन भारतीय साहित्य, संपादक- विश्वनाथ प्रसाद तिवारी।

इस पत्रिका में भी कुछ उनकी महत्व पूर्ण कहानियों को प्रकाशित किया गया हैं तथा दूसरी ओर अन्य लेखकों द्वारा लिखे गए लेख का हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित हैं।

11) पत्रिका – मानुषी, संपादक- मधु कीश्वर (1984)

इस पत्रिका में इस्मत चुगताई की मधु, रूथ और नासिरा के साथ बातचीत की गई बातों को "एक अदम्य साहस" इस्मत चुगताई से मुलाक़ात के नाम से उनके साक्षात्कार को लिखा गया हैं।

शोध प्रश्न:-

1)मुस्लिम समाज में स्त्रियों की वास्तविक स्थिति क्या हैं ?

2)समाज स्त्रियों को किस रूप में देखना चाहता हैं? उसका विरोध स्त्रियाँ किन- किन रूपों में करती हैं?

3)इस्मत चुगताई की विभिन्न नारी पात्र समाज को क्या संदेश देते हैं ?

4)इस्मत चुगताई द्वारा दिए गए विचार व तर्क कितने सार्थक हैं?

5)मुस्लिम समाज में स्त्रियाँ आज आधुनिक काल में अपने अस्तित्व को बनाने के लिए कितना प्रयासरत हैं?

शोध उद्देश्य :-

1) मुस्लिम समाज में स्त्रियों को स्वतंत्र जीवन के लिए किन -किन समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं और उन समस्याओं का विरोध किस रूप में दर्ज करती हैं उसे ज्ञात करना हैं।

2)समाज स्त्रियों पर अनेक बंदिशे लगाता रहता हैं,इस्मत चुगताई ने उसका विरोध किन –किन तर्कों के माध्यम से करती हैं और उसका वास्तविक रूप समाज में दिखाई देता हैं या नहीं उसका उल्लेख और विश्लेषण करना मेरा उद्देश्य है।

3)पितृसत्ता का दबाव मुस्लिम समाज में स्त्रियों के लिए कितना रूढ़ बना है तथा उन रूढ़ियों व परम्पराओं के बीच एक स्त्री जीवन कितना संघर्षशील जीवन व्यतीत कर रही हैं।

शोध प्रविधि:- शोध के लिए मैंनें द्वितीयक स्रोतों आलोचनात्मक पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, लेखों को आधार बनाया हैं। यह पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ व लेख मैंनें महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी

विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, साहित्य अकादमी(दिल्ली), जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के पुस्तकालय से प्राप्त किए हैं।

शोध सीमा:- लेखिका इस्मत चुगताई उर्दू भाषा में ही नहीं पूरे भारतीय साहित्य में चर्चित हैं, हिन्दी में भी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। मेरी शोध सीमा हिंदी व अंग्रेजी में प्रकाशित आलेखों व पुस्तकों के आधार पर हिंदी भाषा में शोध करना मेरा लक्ष्य हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में उनके तीन कहानी संग्रहों **लिहाफ़**, **छुईमुई**, **आधी औरत आधा ख़्वाब** को शामिल किया गया हैं। जिसमें कुल 38 कहानियाँ संकलित हैं इन कहानियों के माध्यम से उन्होंने स्त्री शोषण, स्त्री-पुरुष भेद, तीन तलाक़, बाल विवाह, स्त्री मन का द्वंद्व, दहेज प्रथा, पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री की इच्छाओं की अवहेलना, अंधविश्वासों व रूढ़ियों के बीच पिसती स्त्री, देह व्यापार, स्त्री शिक्षा, हिन्दू –मुस्लिम सांप्रदायिकता, स्त्री मुक्ति, स्त्री समलैंगिकता, विवाह संस्था, तवायफ़ों की समस्या इन सभी समस्याओं को आधार बनाकर इस्मत चुगताई ने मत्वपूर्ण योगदान दिया हैं। प्रस्तुत लघु शोध को कुल चार भागों में विभाजित किया गया हैं :-

प्रथम अध्याय :- इस्मत चुगताई: समय से साक्षात्कार

इस अध्याय में इस्मत चुगताई के समय में स्त्रियों की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक व सांस्कृतिक जो स्थिति थी उसके विषय में विस्तार से बताया हैं। उसके साथ-साथ इस्मत की जीवनी, जीवन में जीतने भी अनुभव हुए तथा उनकी पितृसत्तात्मक समाज के प्रति जो नज़रिया था इन सभी के विषय में बताया हैं।

द्वितीय अध्याय :- इस्मत चुगताई की कहानियों में स्त्री के विभिन्न रूप व मुद्दे

इस अध्याय में इस्मत चुगताई की कहानियों में स्त्री से जुड़े समस्त मुद्दों व स्त्रियों को प्रत्येक क्षेत्र में जिन समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं उसका विस्तार से विश्लेषण व उल्लेख किया हैं। स्त्री के अनेक रूप जो समाज में मौजूद है उसके अनुसार शोषण होता है उस विषय के बारे में विस्तार से बताया हैं।

<u>तृतीय अध्याय</u> :- इस्मत चुगताई की प्रासंगिकता

इस अध्याय में इस्मत चुगताई की प्रासंगिकता के विषय में विस्तार से बताया है वे जिन मुद्दों को अपने समय में लेखन के माध्यम से विरोध करती है वह सभी समस्याएं आज भी समाज में दिखाई देते हैं जिसके विषय में मैंने बताया हैं।

<u>चतुर्थ अध्याय</u> :- इस्मत चुगताई की कहानियों में भाषा एवं शिल्प

इस अध्याय में इस्मत की भाषा व शिल्प की विशिष्टता के बारे में बताया हैं, जिस भाषा का प्रयोग इस्मत ने किया हैं वैसी भाषा कभी किसी लेखक ने प्रयोग नहीं किया। भाषा से जुड़ी सभी विशेषताओं को मैंनें विस्तार से बताया हैं।

शोध के अंत में आधार ग्रंथ व संदर्भ ग्रन्थों, पत्र –पत्रिकाओं तथा शब्द कोश की सूची हैं।